औद्योगीकरण का कामकाजी महिलाओं पर प्रभाव : रांची एवं जमशेदपुर नगर के संदर्भ में एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ0 रेखा चौधरी*

तीव्र औद्योगिक विकास ही प्रगति की कुंजी है। यह न केवल रोजगार के अवसर सृजित करता है बल्कि आस पास आदमी की क्रय क्षमता भी बढ़ाता है। औद्योगिक उत्पादन निर्यात की क्षमता में वृद्धि करता है और बिक्री कर एवं उत्पादन कर के जरिए कुल राजस्व प्राप्तियों को बढ़ाता है। यह राश्ट्र के चहुमुखी विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता हैं। विश्व में बदलती हुई राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक सांस्कृतिक विचारधाराओं में होने वाले परिवर्तन तथा विविधताओं के कारण मनुष्य ने सामान्य रूप से अपने मन में बनने वाली संकल्पनाओं को परिवर्तित कर लिया है। जिसमें उसे अपने आपको समाहित करना है। एकता, समानता, व्यापार व वाणिज्य आदि मनुष्य के सामने के अहम विंदू हैं, जो विविधतायें दर्शा रहे हैं।अपने मन के इस विचार के अनुसार मनुष्य ने ऐतिहासिक रूप से अपने महत्वाकांक्षाओं को दूसरों के साथ के संबंधों के संदर्भ में परिवर्तित कर लिया है। 20वीं शताब्दी की शुरूआत के साथ ही विश्व को औद्योगिक विकास से आगे बढ़ाने की प्रक्रिया आरंभ की जा चुकी थी। जिसे औद्योगीकरण कहा गया। औद्योगीकरण ने संपूर्ण विश्व में उत्पादन की नई प्रक्रिया और मशीनीकरण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। औद्योगीकरण की प्रक्रिया ने मानव जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित किया है। क्योंकि इस प्रक्रिया के बारे में कहा जाता है यह प्रक्रिया संपूर्ण विश्व मे आगे बढ़ रही है जिसके माध्यम के रूप में परिवहन, व्यापार और सूचनायें अहम हैं। जिससे न सिर्फ वस्तु व सेवाओं का विनिमय होता है बल्कि सांस्कृतिक आदान प्रदान और सीमाओं की दूरीयों को भी सीमित करने का प्रयास किया जाता है। नई तकनीक के विकास का उपयोग सूचना, संस्कृति व परिवहन तथाा बड़ी मात्रा में अंतराष्ट्रीय पूंजी का एक देश से दूसरे देश की ओर की आवाजाही को प्रस्तुत करता है। इससे आर्थिक, राजनीतिक पार्यावरणीय और सामाजिक सांस्कृतिक क्षेत्रों में विश्व के लगभग सभी देशों में क्रांतिकारिक परिवर्तन हुए हैं। जिसके सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रभाव रहा है। निश्चित तौर पर इस प्रक्रिया ने मनुष्य के जीवन के प्रत्येक पक्षों को प्रभावित किया है। इसलिए इसका प्रभाव आवश्यक रूप से महिलाओं खास कर कामकाजी महिलाओं पर विशेष तौर पर रहा है। क्योंकि औद्योगीकरण के विकास के कारण महिलाओं में आर्थिक स्रोत के नये उपागम विकसित हुए हैं। इस शोध पत्र के माध्यम से झारखण्ड के दो शहरों रांची व जमशेदपुर के कामकाजी महिलाओं पर औद्योगीकरण के विकास को दर्शाने का प्रयास किया गया है।

औद्योगीकरण

अगर औद्योगीकरण की शुरूआत के स्रोत के बारे में बात की जाए , तो मुझे लगता है कि सबसे पहले इसकी शुरूआत एडम स्मिथ के विचारों की चर्चा की जानी आवश्यक है। एडम स्मिथ को अर्थशास्त्र का पिता भी कहा जाता है। उन्होंने 1776 के अपनी पुस्तक वेल्थ ऑफ नेशन[1] में बताया कि श्रम का विभाजन अंतहीन उत्पादन की प्रणाली की शुरूआत करता है। जिसका प्रमुख कारण है मुक्त बाजार और मानव की असीमित आवश्यकताएं ही जिम्मेवार हैं। अगर स्मिथ की बात पर विश्वास किया

* व्याख्याता चीतरपुर कॉलेज, रामगढ़

जाये तो पाते हैं कि उन्होंने औद्योगीकरण की सीमितता और विश्व बाजार के अंतहिन मुददों को सामने लाने का प्रयास किया था।

कार्ल मार्क्स[2] ने स्मिथ के परिपेक्ष्य को सामने रखते हुए अपनी पुस्तक कम्यूनिष्ट मेनिफोस्टो में लिखा था की बाजार के विस्तारीकरण के साथ साथ बुर्जूआ वर्ग विश्व परिदृश्य पर छाता जाता है। इसको रोकने के लिए इसको प्रत्येक स्तर पर छानने की आवश्यक्ता है। बुर्जूआ अपने शोषण और विश्व बाजार पर अपने आधिपत्य के कारण उत्पादन तथा उपभोग में विश्व के सभी देशों में अपने प्रभुत्व को स्थापित करने में सक्षम होता जाएगा। इसका परिणाम यह होगा की एक दिन बुर्जूआ के छाने के कारण सर्वहारा क्रांति का मार्ग प्रशस्त होगा।

वाल्टर[3] यह विश्वास करते हैं कि औद्योगीकरण के बारे में जो भी सिद्धांत विकसित हुए हैं वे सभी मार्क्स के सिद्धांतों से ही लिए गए हैं क्योंकि मार्क्स ने अपने सिद्धांत आर्थिक प्रणाली और विश्व उत्पादन व्यवस्था पर ही निर्धारित किया था। इसलिए वे लिखते हैं कि पूंजीवाद वास्तविक रूप में आर्थिक अंतराष्ट्रीयकरण का वाहक है जिसमें बाजार व्यवस्था, उत्पादों का वितरण मजदूरों का प्रवसन, आर्थिक चरों का आदान प्रदान जैसी चीजें सम्मिलित की जाती हैं।

मार्क्स[4] का निष्कर्ष है कि वर्तमान विश्व में क्या हो रहा है यह तब तक नहीं कहा जा सकता हैं जब कि इसमें अंतहीन उत्पादन की प्रक्रिया सम्मिलित नहीं होगी। यह सभी सफल हो सकता है जब कि औद्योगीकरण की प्रक्रिंया आरंभ होगी।

ऐंजील्स[5] का कहना है कि इंग्लैंड में जब एक मशीन का आविष्कार हुआ तो विश्व के कितने ही मजदूरों के दैनिक जीवन की आवश्यकता और उत्पादन में सहयोंग को सीमित कर दिया। और इसलिए उत्पादन की बड़ी भारी संख्या ने विश्व को एक वैश्विक बाजार के रूप में परिवर्तित कर दिया है। जिससे स्थानीय तौर पर विकसित होने वाले सभी बाजारों में एकत्रण होते हुए विश्व बाजार स्थापित हो रहे है। ऐंजिल्स के यह विचार यद्यपि 18वीं शताब्दी के हैं परंतु इसकी परिणति वर्तमान में औद्योगीकरण के बलों जैसे विज्ञान पूंजीवाद और तकनीक के रूप में देखा जा सकता है।

बहुत से अर्थशास्त्रियों का यह मानना है कि औद्योगीकरण की आधारशीला यद्यपि 1880 के दशक में रखी गई परंतु यह कोई नई परिस्थिति नहीं है बल्कि काफी पुराने समय से ही यह प्रक्रिया संचालित हो रही थी। वास्तविक रूप में औद्योगीकरण की प्रक्रिया भारत में रेलवे के विकास और उद्योगों की स्थापना से आरंभ माना जाता हैं जो 1900 व 1910 के दशक से ज्यादा तेजी से उभरी। क्योंकि इस समय विश्व के स्तर पर व्यापक पैमाने पर वस्तुओं तकनीकों व लोगों की आवाजाही बढ़ चुकी थी। इसने परिवहन के साधनों की लागत कम कर दी थी ठिक उसी प्रकार से जिस प्रकार वर्तमान में तकनीकों के प्रयोग से इसकी लागत घटी है। अर्थशास्त्री यह कोशिश करते हैं कि औद्योगीकरण की वर्तमान स्थितियों को समय के सापेक्ष देखने के प्रयास किये जायें। जैसे कि 1900 और 1880 में था।

टोनी[6] के अनुसार औद्योगीकरण एक नाम है जिसका की प्रयोंग शक्ति संबंधों प्रयोग व तकनीक की व्याख्या करने के लिए किया जाता है। वे बताते हैं कि विश्व का औद्योगीकरण 1860 के दशक से माना जा सकता है। जबकि औपनिवैशिक शासन ने सभी देशों में अपनी जड़ें जमा ली थी।

औद्योगीकरण की प्रक्रिया का आरंभ पुर्नजागरण और औद्योंगिक क्रांति के साथ ही हो गया था। वे बताते हैं कि पुर्नजागरण और औद्योगिक क्रांति का मुख्य उद्देश्य एक बिना रोक टोक वाली अर्थव्यवस्था का निर्माण करना तथा अंतराष्ट्रीय उद्योगों की स्थापना करना था। नव औद्योगीकरण की प्रक्रिया ऐतिहासिक मुददों के आधार पर ही एक दूसरे के साथ जोड़ी जा रही है। जिसमें अंतराष्ट्रीय पश्चिमी पूंजीवाद का संरक्षण और इसकी संस्कृति का प्रसार करना है। एक दूसरे मार्क्सवादी विचारक

वाल्लर स्टेन[7] ने अपने तरीके से औद्योगीकरण के प्रक्रिया की शुरूआत की व्याख्या प्रस्तुत की है। उनका कहना है कि औद्योगीकरण कोई नई परिकल्पना प्रस्तुत नहीं करता। बल्कि यह एक प्रक्रिया है जो 20 वीं शताब्दी में आरंभ हो चुकी है। जिसके अंतर्गत पूंजीवादी विश्व व्यवस्था की स्थापना निहित है। इसलिए उनके अनुसार औद्योगीकरण आदर्शवादी व्यवस्था की उसी परिकल्पना पर आधारित है जो की ऐतिहासिक रूप से स्थापित हो चुकी है। वे इसके आर्थिक तंत्र पर मुख्यतया ध्यान केंद्रित करते हैं। वे विश्वास करते हैं कि 16वीं शताब्दी से विश्व का समूचा परिदृश्य एक तंत्र में गठित हो रहा था।

नये संदर्भों में औद्योगीकरण वह व्यवस्था है, जिसमें पूंजी राष्ट्रीय सीमाओं को लांघकर मुक्त रूप से विचरण करती हैं। और अपने विस्तार के लिए सस्ते श्रम और सस्ते कच्चे माल की तलाश में रहती है, जिसमें अंतराष्ट्रीय वितीय संस्थाओं तथा अमीर देशों के दबाव से राज्यों के नियम कानून समाप्त किये जाते हैं और एक मुक्त बाजार व्यवस्था को बढ़ावा दिया जाता है। जिससे अंतराष्ट्रीय व्यापार समाकलित किया जा सके। इसमें दुनिया भर का वितीय बाजार आपस में जुड़ा होता है। जिससे औद्योगिक अर्थव्यवस्था की गत्यात्मकता का नियमन कर्ज संकलन की एक विश्वव्यापी प्रक्रिया द्वारा होता है। और जिसमें एक सुधरे हुए पूंजीवाद की व्यवस्था को प्रोत्साहन एवं संरक्षण प्राप्त होता है।

इस अवधारणा का आधार प्रौद्योगिकी है। नई तकनीक की विश्व व्यवस्था में शामिल होने के लिए क्षेत्रीय या राष्ट्रीय सीमाओं को लांघना पड़ता है। इसके लिए नई प्रौद्योगिकी का विस्तारवादी स्वभाव बहूत ही उपयोगी साबित हो रहा है– अगर कथित रूप से औद्योगीकरण को नई प्रौद्योगिकी का सहारा नहीं मिलता तो वह राष्ट्रीय सीमायें नहीं लांघ पाता, क्योंकि राष्ट्रवाद से टकराव में यह अंतर–राष्ट्रवाद शायद ही टिक पाता। परंतु प्रौद्योगिकी बिना आवाज के प्रवेश करती है। और उसके साथ ही प्रवेश करती है औद्योगीकरण की अवधारणा। अकसर निजी उद्यमी सरकार से मांग करते हैं कि व्यापार में उन्हें बराबर का हिस्सा यदि प्राप्त करना है तो सब कुछ बराबर होना चाहिए। इसी मांग को विदेशी व्यापारिक निगम स्वदेशी मुखौटों से करते हैं। औद्योगीकरण पहले के समय में भी रहा है, इसका सिद्वांत यही रहा है कि व्यापार एक दूसरे देश में फैले तथा इसमें ऐसा भी होता है कि शक्तिशाली देश अपने व्यापार का विस्तार करने के लिए हर तरह के रास्ते अपनाता है और ये सभी वही रास्ते वही हैं जो पहले भी अपनाये जाते रहे हैं। फर्क जो आया है, वह विस्तार के साधनों व माल की विशेषता में बदलाव के कारण आया है। क्योंकि अब प्रौद्योगिकी ही इस प्रकार विकसित हुई है, जो किसी एक देश की सीमाओं में नहीं रह सकती, उसका विस्तार ही उसकी व्यापारिक सफलता की कुंजी है। यह किसी भी प्रकार के नियम–कायदे, आर्थिक मान्यताओं यहां तक की सांस्कृतिक एवं धार्मिक मान्यताओं को भी आधुनिक प्रौद्योगिकी के मार्ग में बनने वाली बाधाओं को स्वीकार नहीं करता । कभी–कभी तो सामाजिक रचना को भी बदलने की आवश्यक्ता रही है, इसलिए यह नहीं मानना चाहिए की जब हम नई प्रौद्योगिकी के पंखों पर औद्योगीकरण का वरण करते हैं, तो नई प्रौद्योगिकी और नये उपकरणों को ही अपनाते हैं, बल्कि एक नई और पूरी संस्कृति को भी स्वीकार करते हैं।

निश्चित तौर पर औद्योगीकरण एक प्रक्रिया के रूप में न सिर्फ समाज में उत्पादन के साधनों का विकास करता है, औद्योगिक उत्पादन को बढ़ाता है बल्कि रोजगार के नये स्रोत को उत्पन्न करता है। इससे समाज का हरेक तबका प्रभावित होता है। जिसमें महिलायें प्रमुख हैं, जहां तक पारंपरिक महिलाओं की स्थितियों की बात है तो उनको समाज के आवश्यक उत्पादन साधनों से हमेशा विलग रखा जाता था परंतु उद्योंगों के विकास ने भी महिलाओं के सामने रोजगार के नये साधनों को प्रस्तुत किया है। जिससे महिलाओं की एक नई श्रेणी कामकाजी महिलाओं के रूप में विकसित हुई है।

कामकाजी महिलायें

कामकाजी महिलाओं से तात्पर्य वैसी महिलाओं से जो अपने आर्थिक स्रोतों की प्राप्ति दूसरे माध्यमों से करती है। जो उत्पादन के बाहरी स्रोत कहलाते हैं। कामकाजी महिला शब्द का प्रयोग प्रायः नौकरी करने वाली महिला के संदर्भ में किया जाता है। अर्थात् वे महिलाएं जो घरों के बाहर नियमित रूप से आर्थिक व व्यावसायिक गतिविधियों में व्यस्त रहती हैं। कार्यरत महिलाएं शब्द का प्रयोग उन स्त्रियों के लिए हुआ है जो वेतन वाले काम धंधों में लगी है। काम करने का अर्थ स्वयं काम करना ही नहीं बल्कि दूसरे व्यक्तियों से काम लेना तथा उनके कार्य की निगरानी व निर्देशन भी है। अर्थात कामकाजी महिलाओं का तात्पर्य वैसी महिलायें जो शारीरिक या मानसिक रूप से कोई भी कार्य आर्थिक लाभ के लिए करती हैं। निश्चित तौर पर ये महिलायें उत्पादन की नई व्यवस्था से प्रभावित रही हैं। जिसे औद्योगीकरण कहा गया।

अध्ययन क्षेत्र

रांची जिला– रांची जिला का क्षेत्रफल 4962.82 वर्ग किमी है।[8] जिसकी कुल जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 2912022 है। यहां की दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर 23.90 प्रतिशत है। झारखण्ड की कुल जनसंख्या का 8.83 प्रतिशत भाग रांची में निवास करता है। जनसंख्या की दृष्टि से यह झारखण्ड का पहला जिला है। रांची जिले में 0–6 वर्ष की आयु के बच्चों की कुल संख्या 388052 है जिसमें लड़कों की संख्या 200327 और लड़कीयों की संख्या 187725 है। यहां का लिंगानुपात 950 है। रांची की साक्षरता दर 77.13 प्रतिशत है। जिसमें पुरूष साक्षरता 85.63 प्रतिशत और महिला साक्षरता 68. 20 प्रतिशत है। और इसका जनसंख्या घनत्व 557 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है। 1869 में रांची में नगरपालिका की स्थापना की गई। उस समय घरों की संख्या मात्र 1617 थी और जनसंख्या 12086 थी। 1881 में जिला मुख्यालय को लोहरदगा से रांची लाया गया। रांची नगर निगम की स्थापना 15 सितंबर 1979 में हुई। इसमें वार्डों की संख्या 56 है। जिसका क्षेत्रफल 225 वर्ग किमी है। रांची में लगभग 108 स्लम क्षेत्र हैं जिनकी जनसंख्या 2,50,043 है।

जमशेदपुर जिला– यह पूर्वी सिंहभूम जिले का मुख्यालय है। यहां का क्षेत्रफल 3533.35 वर्ग किमी है। जिसकी कुल जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 2291032 है। यहां की दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर 18.90 प्रतिशत है। झारखण्ड की कुल जनसंख्या का 6.53 प्रतिशत भाग यहां निवास करता है। जनसंख्या की दृष्टि से यह झारखण्ड का तीसरा जिला है। इस जिले की पुरूष संख्या 1175696 तथा महिला संख्या 1115336 है। यहां की महिला साक्षरता 67.33 प्रतिशत तथा पुरूष साक्षरता 84.51 प्रतिशत है। यहां की श्रमिक जनसंख्या 692080 है, जिसमें पुरूष श्रमिक 501110 तथा महिला श्रमिक 190970 है। इसमें गैर कृषिक श्रमिक 53.93 प्रतिशत और घरेलू उद्योग श्रमिक 3.21 प्रतिशत है। निश्चित तौर पर यहां पर कार्य करने वाली अर्थात कामकाजी महिलाओं की एक बड़ी संख्या है।[9]

निष्कर्ष

अगर औद्योगीकरण के महिलाओं पर प्रभावों को देखें तो पाते हैं कि इसने कामकाजी महिलाओं को न सिर्फ आर्थिक रूप से सशक्त बनाया है बल्कि उनकी सामाजिक प्रस्थिति व प्रतिष्ठा में भी बढ़ोतरी की है। इससे महिलाओं के सामाजिक जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं। जिससे वे अब न सिर्फ अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर पाने में सक्षम हो रही हैं बल्कि उनके प्रति होने वाले सामाजिक भेदभाव को रोक पाने में भी उनकी सक्षमता सामने दिखाई पड़ रही है। चाहे बात आर्थिक सशक्तिकरण की हो या सामजिक भेदभाव से लड़ने की सभी स्थितियों में महिलाओं ने अपनी योग्यता को प्रमाणित किया है। दूसरी ओर जहां तक परिवार में आर्थिक सहयोग प्रदान करने की बात है तो वे इसमें में काफी

कारगर भूमिका अदा कर रही है। जो कामकाजी महिलाओं के बदलते परिदृश्य में एक नई छवि को प्रस्तुत कर रहा है। पुराने जमाने की महिलाएं जो पारंपरिकता से ओत प्रोत होती थी व घरेलू कार्यों में ही अपने आपको संलग्न रखती थी अब की महिलायें इससे काफी आगे निकल चुकी हैं।

यदि हम अपने अध्ययन क्षेत्र के आर्थिक क्षेत्र में श्रम शक्ति की बात करें तो हम पाते हैं कि इसमें महिला श्रमिकों का प्रमुख हिस्सा है, लेकिन रोजगार के स्तर और गुणवत्ता की दृष्टि से वे पुरूषों से पीछे रह जाती है। इसके सामाजिक आर्थिक कारण भी है। यहां पर महिला श्रमिकों की संख्या देश की कुल महिलाओं का 5.60 प्रतिशत् है।[10]

शहरी क्षेत्र में बहुत कम संख्या में महिलाएं बैंकिंग, प्रोद्योगिकी, बिजली, गैस, पेट्रोलियम इत्यादि क्षेत्रों में कार्यरत है। शहरी आर्थिक क्षेत्रों में 80 प्रतिशत् श्रमिक महिलाएं घरेलू उद्योगों, छोट–छोटे व्यवसायों और नौकरी तथा भवन–निर्माण जैसे असंगठित क्षेत्रों में काम कर रही है। यहां की ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक स्थिति शहरी क्षेत्रों की अपेक्षा असंतोषजनक है। कुल महिला श्रम शक्ति का बहुत बड़ा हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है जिसमें 87 प्रतिशत् खेतिहर मजदूर है।[11]

आर्थिक क्षेत्र में तकनिकी परिवर्तन के कारण महिलाएं प्रभावित हुई हैं। शहरी क्षेत्रों में जिन महिलाओं ने तकनिकी ज्ञान अर्जित किया है, वे अच्छी स्थिति में है तथा निजी एवं सार्वजनिक प्रतिष्ठानों में अपनी सेवाएं प्रदान कर रहीं है। परंतु उच्च शिक्षा एवं निरक्षरता के कारण अधिकाशं महिला असंगठित क्षेत्रों में ही कार्य कर रही है।

ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि मुख्य आर्थिक क्रियाकलाप है। तकनिकी परिवर्तन के दौर में ग्रामीण भारत में महिलाओं की स्थिति पर भी प्रभाव डाला है। उदाहरण के लिए जिन क्षेत्रों में हरित क्रांति के कारण कृषि का विकास हुआ, वहां खेतों में काम करने वाली महिलाओं में तेजी से गिरावत आई। खेतों में बीज के बुआई से लेकर फसल कटाई तक, ट्रेक्टर एवं आधुनिक मशीनों के प्रयोग से बड़ी संख्या में महिला कृषि श्रमिक विस्थापित हुई। जिनके पास अपनी भूमि थी उन्हें हरित क्रांति से आर्थिक लाभ प्राप्त किया। परंतु ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश महिलाएं खेतिहर मजदूर के रूप में कार्य करती है जिनकी आर्थिक स्थिति को हरित क्रांति ने और दयनीय बना दिया।

अगर औद्योगीकरण के कामकाजी महिलाओं पर प्रभाव देखें तो पाते हैं कि उनमें

1. *अधिकारों के साथ कर्तव्यों के प्रति जागरूकता*
2. *निर्णय लेने की क्षमता का विकास*
3. *उच्च तकनीकी शिक्षा करने के अवसर*
4. *स्व–रोजगार के स्वयं सहायता समूहों का ज्ञान, एवं*
5. *महिलाओं का आत्मविश्वास एवं आत्मसम्मान बढ़ाने पर कार्यक्रम आयोजित करने की।*

इन परिस्थितियों का विकास हुआ जिसे निश्चित तौर पर एक क्रांतिकारी कदम माना जा सकता है।

रांची व जमशेदपुर शहर की कामकाजी महिलायें भी इन परिवर्तनों से अलग नहीं रह पाई हैं। उनकी जीवन शैली और कार्य की परिस्थितियां परिवर्तित हो रही है। इससे उनकी पारंपरिक संरचना और आर्थिक .स्थितियां परिवर्तित हो रही हैं। और दूसरी ओर आधुनिक समाज पर उनकी निर्भरता भी बढी है। वे अपने अधिकारों के प्रति ज्यादा से ज्यादा जागरूक होती जा रही है। और अपनी सुरक्षा के प्रति सजग दिखाई देती हैं।

संदर्भ :

1. स्मिथ, एडम, 1776, वेल्थ ऑफ नेशन उद्धृत डब्ल्यू स्ट्राहन, 2012, एन इन्क्वायरी इन्टू द नेचर एण्ड काउज ऑफ वेल्थ आफ नेशन, राउटलेज पब्लिकेशन लंदनः रिट्राइभ 07–12–2012 पृ संख्याा 19
2. मार्क्स कार्ल,1848, कम्यूनिष्ट मैनिफेसटो, उद्धृत मार्क्ससिस्ट इंटरनेट अरकाइभ, मैनिफेस्टो ऑफ द कम्युनिष्ट पार्टी रिट्राइभ 14 मार्च 2015 पृ 112
3. वाल्टर वालरस्टेन, 1998, थॉट्स ऑफ इंडस्ट्रियलाइजेशन, बेला स्टर्न प्रेस, न्यूयॉर्क, पृ.संख्या 3
4. पूर्वोक्त मार्क्स पृ 51
5. पूर्वोक्त मार्क्स पृ 119
6. टोनी डॉवेल जॉन, 2000, द आइडेंटिफाइंग फिक्शन ऑफ इंडस्ट्रियलाइजेशन, मैक्मिलन प्रकाशन, पालग्रेवे पृ संख्या 38
7. पूर्वोक्त वाल्टर स्टेन
8. भारत की जनगणना 2011
9. भारत की जनणना 2011
10. आलम गजनफर एवं अली, इरशाद, ग्रामीण भारत में महिला सशक्तिकरण के जनांकिकी एवं सामाजिक पक्ष। प्रतियोगिता दर्पण, साहित्य प्रकाशन,आगरा, नवंबर 2008, पृ संख्या 669
11. ठाकुर, अनिल एवं रंजन अनिल कुमार, महिलायें कितनी आजाद, मिनाक्षी प्रकाशन, दिल्ली, 2009, पृ संख्या 165–170